यहां धधकते ज्वालामुखी पर विराजित हैं भगवान गणेश

गणपति हिंदू धर्म के प्रमुख देवताओं में से एक है और कोई भी काम करने से पहले सबसे पहले उनका आव्हान किया जाता है। भगवान गणेश प्रथम पूज्य हैं और उनके बिना किसी भी काम को शुरू नहीं किया जाता। आज हम आपको भगवान गणेश की 700 साल पुरानी एक ऐसी प्रतिमा के बारे में बताते हैं जो ज्वालामुखी पर विराजमान है।

कहां है प्रतिमा

भगवान गणेश की ज्वालामुखी पर विराजित 700 साल पुरानी यह प्रतिमा इंडोनेशिया के माउंट ब्रोमो में मौजूद है। यहां पर गुनुंग ब्रोमो नाम का एक ज्वालामुखी है, जो सक्रिय है और इसमें से लगातार धुआं निकलता रहता है और आग भी नजर आती है। कमाल की बात यह है कि श्री गणेश की यह प्रतिमा ठीक ज्वालामुखी के मुहाने पर स्थित है और कभी भी यह आग नहीं उगल पाता है। यही कारण है कि लोग ऐसा मानते हैं कि स्वयं श्री गणेश इस ज्वालामुखी से निकलने वाली आग से लोगों की रक्षा कर रहे हैं।

भगवान करते हैं रक्षा

ज्वालामुखी के आसपास कई लोग निवास करते हैं, जिन्हें स्थानीय भाषा में टेनेगर कहा जाता है। ज्वालामुखी के मुहाने पर स्थित यह गणेश प्रतिमा इन लोगों के लिए बहुत पूजनीय है और सभी यहां पर दर्शन पूजन करने के लिए आते हैं। लोगों का मानना है कि स्वयं श्री गणेश उनकी रक्षा के लिए यहां विराजमान है।

पवित्र माना जाता है पर्वत

श्री गणेश की प्रतिमा जिस पर्वत पर मौजूद है वह माउंट ब्रोमो के नाम से पहचाना जाता है, जिसका नाम भगवान ब्रह्मा से प्रेरित होकर रखा गया है। यह पहाड़ टेनेगर सेमेरू नेशनल पार्क में स्थित है। इंडोनेशिया में ऐसे कई सारे मंदिर है जिन्हें देखकर आप आराम से समझ सकते हैं कि यहां पर हिंदू देवी देवताओं को कितना महत्व दिया जाता है।

इंडोनेशिया में पूजनीय हैं हिंदू भगवान

आपको जानकर हैरानी होगी लेकिन इंडोनेशिया एक ऐसी जगह है जहां पर लगभग 141 ज्वालामुखी है और इनमें से 130 बिल्कुल सक्रिय है, लेकिन इसके बावजूद भी लोगों को कोई नुकसान नहीं पहुंच पाता। क्योंकि उनके बीच यह आस्था है कि श्री गणेश उनकी रक्षा करते हैं। यहां पर गणपति बप्पा को समर्पित कई सारे मंदिर भी मौजूद है। स्थानीय लोगों के मुताबिक उनके पूर्वजों में इन प्रतिमाओं को स्थापित किया था और तभी से इन्हें पूजा जा रहा है।

कैसे पहुंचे माउंट ब्रोमो

अगर आप 700 साल पुरानी इस अनोखी प्रतिमा के दर्शन करना चाहते हैं तो उसके लिए आपको फ्लाइट लेकर सुराबाया इंटरनेशनल एयरपोर्ट तक पहुंचना होगा। यहां से आपको बस मिलेगी जो आपको पुराबाया टर्मिनल तक छोड़ेगी। यहां से आप माउंट ब्रोमो की यात्रा शुरू कर सकते हैं। यहां तक जाने के लिए आपको स्थानीय गाइड का सहारा लेना होगा। वापस आने के लिए टैक्सी की जा सकती है।

दुनिया भर में सिर्फ नर्मदा और केन नदियों में ही पाये जाते हैं दुर्लभ शजर पत्थर

उत्तर प्रदेश के बांदा में सिर्फ केन नदी में ऐसे पत्थर देखने को मिलते हैं, जिसमें कुदरत ने खुद कलाकारी की है। ये खास किस्म के पत्थरों को शजर पत्थर कहा जाता है। शजर का पर्शियन में मतलब पेड़ होता है। इन पत्थरों पर उकरी कलाकारी देखकर लगता है कि जैसे किसी चित्रकार या कलाकार ने किया है। पत्थर पर उकेरी हुई पत्तियां, पेड़ और उनकी अनूठी आकृति देखते ही बनती है। इन पत्थरों की पहचान 400 साल पहले हुई थी। अरब से आए लोगों ने इन पत्थरों की खूबियां समझी और मुगलों के समय इनकी कीमत और ज्यादा बढ़ गई। इन पत्थरों को ज्वैलरी, डेकोरेटिव सामान पर खूब इस्तेमाल किए जाते हैं। वैज्ञानिकों की मानें तो पत्थर पर ये कुदरती आकृति फंगल के विकास के कारण होती है।

बुंदेलखंड के बांदा जिले की केन नदी प्रदेश की इकलौती और देश की दूसरी नदी है जो पत्थरों में रंगीन चित्रकारी करती है। इस नदी में मिलने वाले दुर्लभ पत्थर बेहद खूबसूरत होते हैं जो अपने भीतर दिखने वाली खूबसूरती के लिए मशहूर हैं। इन पत्थरों को शजर कहा जाता है। फारसी में शजर पेड़ को कहा जाता है। खास बात यह है कि कोई भी दो शजर पत्थर एक जैसे नहीं होते, मतलब हर एक पत्थर में अलग-अलग चित्रकारी। दुनिया भर में शजर पत्थर सिर्फ भारत की दो नदियों केन और नर्मदा में ही पाये जाते हैं। अरब देशों में इस पत्थर को हकीक और भारत में स्फटिक कहते हैं। इन दिनों खरीदे व बेचे जा रहे हैं।

मशीन से तराशने के बाद शजर पत्थर में झाडियां, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, मानव और नदी की जलधारा के चमकदार रंगीन चित्र उभरते हैं। बांदा के स्थानीय लोगों के मुताबिक, जब शरद पूर्णिमा की चांदनी रात में किरणें शजर पत्थरों पर पड़ती हैं तो इन पर आकृतियां उभरती हैं। उनका कहना है कि चांदनी की किरणों जब पत्थर पर पड़ती हैं तो उनके बीच में जो भी आकृति आती है, वह इन पत्थरों पर उभर आती है। वहीं, वैज्ञानिकों का मानना है कि शजर पत्थर पर उभरने वाली आकृति फंगस ग्रोथ है।

400 साल पहले हुई थी खोज

हमेशा से ही केन नदी में मौजूद था, लेकिन 400 साल पहले अरब से आये लोगों ने इसकी पहचान की। वह इसकी खूबसूरती देखकर दंग रह गये थे। इन पत्थरों पर कुदरती रूप से पेड़, पत्ती की आकृति उकेरी थी, जिसके कारण उन्होंने इसका नाम शजर रख दिया।

पौराणिक मान्यता

पौराणिक मान्यताओं के मुताबिक, केन नदी का पुराना नाम कर्णावती नदी था। बाद में इसे किनिया और फिर कन्या कहा जाने लगा। अब इसे केन नदी कहा जाता है। केन एक कुमारी कन्या है का उल्लेख महाभारत काल में मिलता है।

शौकीन लोग अंगूठी में जड़वाते हैं

शजर पत्थरों का इस्तेमाल आभूषणों, कलाकृति जैसे ताजमहल, सजावटी सामान व अन्य वस्तुएं जैसे वाल हैंगिंग में लगाने के काम में प्रयोग होता है। मुगलकाल में शजर पत्थरों के इस्तेमाल से बेजोड़ कलाकृतियां बनाई गई। बांदा और लखनऊ में शजर पत्थर से बने आभूषणों का बड़ा कारोबार होता है। शौकीन लोग इसे अंगूठी में नग के तौर पर भी जड़वाते हैं। राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हस्तशिल्पी द्वारका प्रसाद सोनी बताते हैं कि शजर पत्थर की पहले कटाई और घिसाई होती हैं, जिसके बाद इसे मनचाहे आकर में ढाला जाता है। सोने चांदी में जड़ने के बाद शजर की कीमत और बढ़ जाती है।

शजर पत्थर को ब्रिटेन ले गई थीं महारानी विक्टोरिया

ईस्ट इंडिया कंपनी के शासनकाल में ब्रिटेन की महारानी क्वीन विक्टोरिया के लिए दिल्ली दरबार में नुमाइश लगाई गई थी। इसमें रानी विक्टोरिया को शजर पत्थर इतना पंसद आया था वह इसे अपने साथ ब्रिटेन भी ले गई थीं।दुनिया भर में खासकर मुस्लिम देशों में शजर पत्थर की खासी डिमांड है। मुसलमानों के बीच में इस पत्थर का विशेष महत्व है। वह इसे कुदरत का नायाब तोहफा मानते हैं और इस पर कुरान की आयतें लिखवाते हैं। इतना ही नहीं मक्का जाने वाले हजयात्री इस पत्थर को लेकर जाते हैं। व्यापारियों के मुताबिक, ईरान में इसकी मुंहमांगी कीमत मिलती है। कुछ लोगों का मानना है कि इस पत्थर को पहनने से बीमारियां दूर भागती हैं।

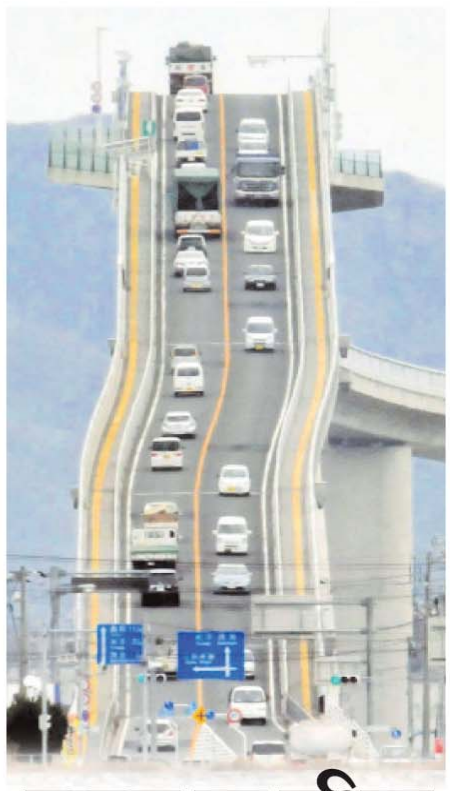

जापान का एशिमा ओहाशी ब्रिज

आसान नहीं इस पर गाड़ी चलाना

दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा ब्रिज जापान का एशिमा ओहाशी ब्रिज दिखने में जितना खतरनाक है, उससे कहीं ज्यादा डरावना इस पर गाड़ी चलाना है। इसे दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा ब्रिज माना जाता है। यह ब्रिज नाकाउमी लेक के ऊपर बना है और इस ब्रिज को सीधा बनाने के पीछे कारण है कि जहाज को ब्रिज के नीचे से जाने में दिक्कत न हो। यह ब्रिज साकाइमिनाटो और मात्सू शहरों को जोड़ता है। इस ब्रिज पर गाड़ी चलाना किसी रोलरकोस्टर राइड से कम नहीं है। यह ब्रिज साल 2004 में बनकर तैयार हुआ था। पहले ऊपर उठना और फिर ढलाने लेते हुए एकदम से नीचे आना आपके रोंगटे खड़े कर देता है।

क्यों बनाना पड़ा ब्रिज का ऐसा डिजाइन

- ये ब्रिज नाकाउमी लेक पर बना है, जो मात्सू और साकाइमिनाटो शहरों को आपस में जोड़ता है।
- ब्रिज को सीधा खड़ा इसलिए बनाया गया है, ताकि लेक में शिप को ब्रिज के नीचे से जाने में दिक्कत न आए।
- दो लेन में क्रांकीट रोड वाला ये ब्रिज 1.7 किमी लंबा है और इसकी चौड़ाई 11.4 मीटर है।
- इसका कंस्ट्रक्शन 1997 में शुरु हुआ और 2004 में पूरा हुआ।
- इस पुल के 6.1 फीसदी झुकाव शिमाने प्रांत की तरह और 5.1 फीसदी झुकाव टोटरी प्रांत की तरफ है।
- अपने अजीबोगरीब डिजाइन के चलते ये पुल रोलरकोस्टर के जैसा नजर आता है।
- ब्रिज की खासियत देखते हुए देहात्सु मोटर कंपनी ने अपनी टांटो मिनीवैन के एड में इसका जिक्र किया है।
- एड में इस पुल के जरिए गाड़ी की स्थिरता की जांच की बात कही गई है।

रहस्यमय है ये समुद्र, यहां चाहकर भी डूबना है नामुमकिन

दुनिया में एक से बढ़कर एक और अजीबोगरीब चीज मौजूद है जो अपनी खासियतों से लोगों को हैरान कर देती है। कुछ जगह तो लोगों को आश्चर्य में डालने का काम करती है और जब इनके बारे में पता चलता है तो सभी के होश उड़ जाते हैं। समुद्र एक ऐसी चीज है जिसकी खूबसूरती हमेशा से ही लोगों का दिल जीतती आई है। समुद्र में मस्ती का आनंद तभी लिया जा सकता है जब आपको अच्छी तरह से तैरना आता हो। लेकिन अगर तैरना नहीं आता है तो कोई भी समुद्र के किनारे पर रहकर ही आनंद ले सकता है। आज हम आपको जिस समुद्र के बारे में बता रहे हैं वहां तैराकी ना जानने वाले लोग भी तैर सकते हैं क्योंकि यह एक ऐसी जगह है जहां आप चाह कर भी नहीं डूब पाएंगे। हम जिस जगह की बात कर रहे हैं उसे डेड सी के नाम से जाना जाता है चलिए आज आपको इसके बारे में बताते हैं।

कहां है डेड सी

यह खूबसूरत सा डेड सी यानी की मृत समुद्र जॉर्डन और इजरायल के बीच में मौजूद है। यह दुनिया की सबसे गहरी खारे पानी की झील के रूप में पहचाना जाता है। इस समुद्र में इतना नमक है कि दबाव के कारण यहां कोई नहीं डूबता।

चाहकर भी नहीं डूब सकता व्यक्ति

यह डेड सी 3 लाख साल पुराना है। यह पृथ्वी के सबसे निचले बिंदु पर स्थित है और इसकी डेंसिटी बहुत ही ज्यादा है। जब इसके पानी में बहाव आता है तो वह नीचे से ऊपर की ओर रहता है। यही कारण है कि अगर कोई व्यक्ति इसके ऊपर पूरी तरह से सीधा लेट भी जाए तो वह इसमें डूब नहीं सकता।

ऐसे मिला डेड सी नाम

इस समुद्र को डेड सी नाम मिलने के पीछे की वजह यह है कि इसमें अधिक मात्रा में नमक है जो इतना ज्यादा खारा है कि ना तो कोई जीव जंतु और ना ही पेड़ पौधे इसमें जीवित रह पाते हैं। इस पानी के नमक में बड़ी मात्रा में जिंक, मैग्निशियम, कैल्शियम, पोटाश और ब्रोमाइड जैसे तत्व पाए जाते हैं। यही कारण है कि इसका इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। इस समुद्र में मछलियां कोई अन्य समुद्री जीव और समुद्र में पाए जाने वाले एक्टिक प्लांट्स भी नहीं पाए जाते हैं।

त्वचा की बीमारी होती है दूर

यह डेड सी दुनिया भर में मशहूर है और अक्सर ही अपनी अनोखी खूबियों की वजह से लोगों के बीच चर्चा का विषय रहता है। अन्य समुद्री की तुलना में इस समुद्र में जो पानी है वह 33% ज्यादा खारा है। यहां के पानी की एक विशेषता भी है और कहा जाता है कि इसमें जो नहाता है उसकी त्वचा संबंधी सारी बीमारियां दूर हो जाती है। पानी की इसी विशेषता के चलते कई लोग यहां पर स्विमिंग का आनंद लेने के लिए पहुंचते हैं। यहां के पानी और मिट्टी के इस्तेमाल से कई ब्यूटी प्रोडक्ट भी बनाए जाते हैं।